शराबबंदी के लिए गांवों की यात्रा शुरू

(पलवल), नभाटा 30 नवम्बर। जैसे ही गांव में भगवा वस्त्रधारियों का काफिला पहुंचता है, काफी देर से उनकी बाट जोह रहे गांववासी इकठ्टे हो जाते हैं। काफिले में शामिल लोगों ने ओ३म् ध्वज अपने हाथों में लिए हैं। ये लोग जिनमें देश के कई प्रसिद्ध संन्यासी भी हैं गांव के लोगों को शराब के खिलाफ एकजुट करने आये हैं।

भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के नेतृत्व में चल रही इस 'शराबबंदी अभियान यात्रा' का मुख्य मकसद शराब के खिलाफ जनांदोलन खड़ा करने का है। यात्रा में मुख्य रूप से शामिल संन्यासियों में रोहतक से पूर्व सांसद स्वामी इन्द्रवेश, राज्य के पूर्व शिक्षा मंत्री तथा बंधुआ मुक्ति मोर्चा के अध्यक्ष स्वामी अग्निवेश, पूर्व विधायक स्वामी आदित्यवेश, स्वामी दलीप मुनि (राजस्थान), स्वामी नारदानंद (एटा), जगवीर सिंह, विरजानन्द, रामधारी शास्त्री, जयवीर आचार्य आदि शामिल हैं।

शराब विरोधी नारों तथा महर्षि दयानन्द की जय-जयकार के बीच सभा शुरू होती है। गांव के पूर्व सरपंच गिर्राज सिंह को सभा की अध्यक्षता सौंपी जाती है। कई संन्यासी तथा आर्य युवक परिषद् के नेता लोगों को शराब से होने वाले विनाश के बारे समझाते हैं।

जैसे ही स्वामी अग्निवेश अपना भाषण देने के लिए खड़े हुए तो तालियों की गड़गड़ाहट से उनका स्वागत हुआ।

स्वामी अग्निवेश लोगों को समझाते हैं कि शराब माफिया ने पूरी तरह राजनीति को अपने कब्जे में ले रखा है। जिस भी पार्टी की सरकार सत्ता में आती है, शराब के ठेकेदारों से करोड़ों रुपये वसूलती है। उनके अनुसार हरियाणा निर्माण के समय हरियाणा में मात्र 13 लाख लीटर शराब बनती थी, लेकिन अब 16 करोड़ लीटर शराब हरियाणा में बनती है। पहले राज्य में शराब के जहां तीन कारखाने थे, वहां अब शराब के 21 कारखाने हैं।

उनके अनुसार शराब से राजस्व की आमदनी भी मात्र भ्रांति है। शराब से सरकार को जितनी आमदनी होती है, उससे ज्यादा सरकार को खर्चा करना पड़ता है। शराब पीने के बाद होने वाले अपराध, मुकदमे, दुर्घटना, बीमारी आदि पर सरकार को बेहद खर्चा करना पड़ता है। उनके अनुसार किसान के उत्पाद के भाव, बिजली, खाद, शिक्षा, चिकित्सा आदि मुझे आज शराब के आगे गौण नजर आते हैं।

स्वामी इन्द्रवेश ने कहा कि अब पानी सिर से ऊपर जा चुका है। अब हरियाणा में शराब विरोधी आंदोलन होगा। उनके अनुसार सरकार नई आबकारी नीति लागू करने से पहले राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू करे। उनके अनुसार आगामी 28 फरवरी से पूर्व राज्य में एक हजार शराब विरोधी जनसभाएं की जाएंगी। ●

3 दिसम्बर 1992 को राष्ट्रीय सहारा लिखता है-